

سُورَةُ السَّجْدَةِ

Surah 32 — As-Sajda (The Prostration) · Meccan · 30 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अलिफ़ लाम मीम

2

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ

इसमे कुछ शक नहीं कि किताब कुरान का नाज़िल करना सारे जहाँ के परवरदिगार की तरफ से है

3

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَاهُمْ مِنْ نَذِيرٍ ۚ مِنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ

क्या ये लोग (ये कहते हैं कि इसको इस शख्स (रसूल) ने अपनी जी से गढ़ लिया है नहीं ये बिल्कुल तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बरहक़ है ताकि तुम उन लोगों को (खुदा के अज़ाब से) डराओ जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला आया ही नहीं ताकि ये लोग राह पर आएँ

4

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۚ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ ۚ مِنْ وَلِيٍّ ۚ وَلَا شَفِيعٍ ۚ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ

खुदा ही तो है जिसने सारे आसमान और ज़मीन और जितनी चीज़े इन दोनो के दरमियान हैं छह : दिन में पैदा की फिर अर्श (के बनाने) पर आमादा हुआ उसके सिवा न कोई तुम्हारा सरपरस्त है न कोई सिफारिशी तो क्या तुम (इससे भी) नसीहत व इबरत हासिल नहीं करते

5

يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ ۚ كَانَ مِقْدَارُهُ ۚ أَلْفَ سَنَةٍ ۚ مِمَّا تَعُدُّونَ

आसमान से ज़मीन तक के हर अम्र का वही मुद्बिर (व मुन्तज़िम) है फिर ये बन्दोबस्त उस दिन जिस की मिक़दार तुम्हारे शुमार से हज़ार बरस से होगी उसी की बारगाह में पेश होगा

6

ذَلِكَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

वही (मुद्बिर) पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला (सब पर) ग़ालिब मेहरबान है

7

الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۚ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ۚ

वह (क्रादिर) जिसने जो चीज़ बनाई (निख सुख से) खूब (दुरुस्त) बनाई और इन्सान की इबतेदाई ख़िलक़त मिट्टी से की

8

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ ۚ مِنْ سُلَالَةٍ ۚ مِنْ مَّاءٍ ۚ مَّهِينٍ ۚ

उसकी नस्ल (इन्सानी जिस्म के) खुलासा यानी (नुत्फे के से) ज़लील पानी से बनाई

9

ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُوحِهِ ۚ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا ۚ مَا تَشْكُرُونَ

फिर उस (के पुतले) को दुरुस्त किया और उसमें अपनी तरफ से रुह फूँकी और तुम लोगों के (सुनने के) लिए कान और (देखने के लिए) आँखें और (समझने के लिए) दिल बनाएँ (इस पर भी) तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो

10

وَقَالُوا ۚ أَإِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ ۚ جَدِيدٍ ۚ بَلْ هُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ كُفْرُونَ

और ये लोग कहते हैं कि जब हम ज़मीन में नापैद हो जाएँगे तो क्या हम फिर नया जन्म लेगे (क़यामत से नहीं) बल्कि ये लोग अपने परवरदिगार के (सामने हुज़ूरी ही) से इन्कार रखते हैं

11

﴿قُلْ يَتَوَفَّاكُم مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ﴾

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मलकुलमौत जो तुम्हारे ऊपर तैनात है वही तुम्हारी रुहें कब्ज़ करेगा उसके बाद तुम सबके सब अपने परवरदिगार की तरफ लौटाए जाओगे

12

﴿وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا رُءُوسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ﴾

और (ऐ रसूल) तुम को बहुत अफसोस होगा अगर तुम मुजरिमों को देखोगे कि वह (हिसाब के वक्त) अपने परवरदिगार की बारगाह में अपने सर झुकाए खड़े हैं और (अर्ज़ कर रहे हैं) परवरदिगार हमने (अच्छी तरह देखा और सुन लिया तू हमें दुनिया में एक दफा फिर लौटा दे कि हम नेक काम करें

13

﴿وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًى وَلَكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ﴾

और अब तो हमको (क्रयामत का) पूरा पूरा यकीन है और (खुदा फरमाएगा कि) अगर हम चाहते तो दुनिया ही में हर शख्स को (मजबूर करके) राहे रास्त पर ले आते मगर मेरी तरफ से (रोजे अज़ा) ये बात करार पा चुकी है कि मैं जहन्नुम को जिन्नात और आदमियों से भर दूँगा

14

﴿فَذُوقُوا﴾ ﴿بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا إِنَّا نَسِينَكُم﴾ ﴿وَذُوقُوا﴾ ﴿عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ﴾

तो चूँकि तुम आज के दिन हुज़ूरी को भूले बैठे थे तो अब उसका मज़ा चखो हमने तुमको क़सदन भुला दिया और जैसी जैसी तुम्हारी करतूतें थीं (उनके बदले) अब हमेशा के अज़ाब के मज़े चखो

15

﴿إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا خَرُّوا﴾ ﴿سُجَّدًا﴾ ﴿وَسَبَّحُوا﴾ ﴿بِحَمْدِ رَبِّهِمْ﴾ ﴿وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ﴾

हमारी आयतों पर ईमान बस वही लोग लाते हैं कि जिस वक्त उन्हें वह (आयते) याद दिलायी गयीं तो फौरन सजदे में गिर पड़ने और अपने परवरदिगार की हम्दो सना की तस्बीह पढ़ने लगे और ये लोग तकबुर नहीं करते (15) (सजदा)

تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا ۖ وَطَمَعًا ۚ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ

(रात) के वक्त उनके पहलू बिस्तरों से आशना नहीं होते और (अज़ाब के) खौफ और (रहमत की) उम्मीद पर अपने परवरदिगार की इबादत करते हैं और हमने जो कुछ उन्हें अता किया है उसमें से (खुदा की) राह में खर्च करते हैं

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ ۖ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ ۚ جَزَاءً ۚ بِمَا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

उन लोगों की कारगुज़ारियों के बदले में कैसी कैसी आँखों की ठन्डक उनके लिए ढकी छिपी रखी है उसको कोई शरूष जानता ही नहीं

أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا ۚ كَمَن كَانَ فَاسِقًا ۚ ۚ لَا يَسْتَوُونَ

तो क्या जो शरूष ईमानदार है उस शरूष के बराबर हो जाएगा जो बदकार है (हरगिज़ नहीं) ये दोनों बराबर नहीं हो सकते

أَمَّا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا ۚ ۚ بِمَا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अच्छे काम किए उनके लिए तो रहने सहने के लिए (बेहश्त के) बाग़ात हैं ये सामाने ज़ियाफ़त उन कारगुज़ारियों का बदला है जो वह (दुनिया में) कर चुके थे

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا ۚ فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۚ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا ۚ مِنْهَا أُعِيدُوا ۚ فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهِ ۚ تَكْذِبُونَ

और जिन लोगों ने बदकारी की उनका ठिकाना तो (बस) जहन्नुम है वह जब उसमें से निकल जाने का इरादा करेंगे तो उसी में फिर ढकेल दिए जाएंगे और उन से कहा जाएगा कि दोज़ख के जिस अज़ाब को तुम झुटलाते थे अब उसके मज़े चखो

وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

और हम यक़ीनी (क़यामत के) बड़े अज़ाब से पहले दुनिया के (मामूली) अज़ाब का मज़ा चखाएंगे जो अनक़रीब होगा ताकि ये लोग अब भी (मेरी तरफ) रुज़ू करें

22

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ۖ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ

और जिस शख्स को उसके परवरदिगार की आयतें याद दिलायी जाएँ और वह उनसे मुँह फेर उससे बढ़कर और ज़ालिम कौन होगा हम गुनाहगारों से इन्तक़ाम लेंगे और ज़रूर लेंगे

23

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ ۖ مِنْ لِقَائِهِ ۚ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ

और (ऐ रसूल) हमने तो मूसा को भी (आसमानी किताब) तौरैत अता की थी तुम भी इस किताब (कुरान) के (अल्लाह की तरफ से) मिलने में शक में न पड़े रहो और हमने इस (तौरैत) तो तुम को भी बनी इसराईल के लिए रहनुमा करार दिया था

24

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أُمَمَةً ۖ يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۚ وَكَانُوا ۖ بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ

और उन्ही (बनी इसराईल) में से हमने कुछ लोगों को चूँकि उन्होंने (मुसीबतों पर) सब्र किया था पेशवा बनाया जो हमारे हुक्म से (लोगों की) हिदायत करते थे और (इसके अलावा) हमारी आयतों का दिल से यक़ीन रखते थे

25

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا ۚ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ

(ऐ रसूल) हसमें शक नहीं कि जिन बातों में लोग (दुनिया में) बाहम झगड़ते रहते हैं क़यामत के दिन तुम्हारा परवरदिगार क़तई फैसला कर देगा

26

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسْكِنِهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ ۚ أَفَلَا يَسْمَعُونَ

क्या उन लोगों को ये मालूम नहीं कि हमने उनसे पहले कितनी उम्मतों को हलाक कर डाला जिन के घरों में ये लोग चल फिर रहे हैं बेशक उसमें (कुदरते खुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं तो क्या ये लोग सुनते नहीं हैं

27

أَوَلَمْ يَرَوْا ۚ أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ ۚ زَرْعًا ۖ تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ ۚ أَفَلَا يُبْصِرُونَ

क्या इन लोगों ने इस पर भी ग़ौर नहीं किया कि हम चटियल मैदान (इफ़तादा) ज़मीन की तरफ पानी को जारी करते हैं फिर उसके ज़रिए से हम घास पात लगाते हैं जिसे उनके जानवर और ये खुद भी खाते हैं तो क्या ये लोग इतना भी नहीं देखते

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْفَتْحُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ

और ये लोग कहते हैं कि अगर तुम लोग सच्चे हो (कि क़यामत आएगी) तो (आखिर) ये फैसला कब होगा

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि फैसले के दिन कुफ़र को उनका ईमान लाना कुछ काम न आएगा और न उनको (इसकी) मोहलत दी जाएगी

فَاعْرِضْ عَنْهُمْ وَأَنْتَظِرُ إِنَّهُمْ مُنْتَضِرُونَ

गरज़ तुम उनकी बातों का ख्याल छोड़ दो और तुम मुन्तज़िर रहो (आखिर) वह लोग भी तो इन्तज़ार कर रहे हैं